1 डॉ० रामकुमार वर्मा

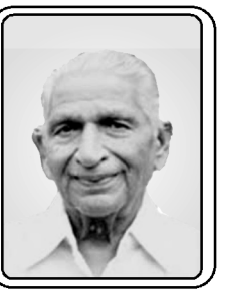

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—15 नवम्बर, 1905 ई०।
- **जन्म-स्थान**—सागर (म० प्र०)।
- **पिता**—श्री लक्ष्मीप्रसाद वर्मा।
- **माता**—श्रीमती राजरानी देवी।
- **बचपन का उपनाम**—कुमार।
- **मृत्यु**—5 अक्टूबर, 1990 ई०।

जीवन-परिचय—आधुनिक हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध एकांकीकार डॉ0 रामकुमार वर्मा का जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिले में 15 नवम्बर, 1905 ई0 को हुआ था। आपके पिता श्री लक्ष्मीप्रसाद वर्मा मध्य प्रदेश में ही डिप्टी कलेक्टर थे। वर्मा जी को प्रारम्भिक शिक्षा इनकी माता श्रीमती राजरानी देवी ने अपने घर पर ही दी, जो उस समय की हिन्दी कवयित्रियों में विशेष स्थान रखती थीं। बचपन में इन्हें 'कुमार' के नाम से पुकारा जाता था। 'कुमार' में प्रारम्भ से ही प्रतिभा के स्पष्ट चिह्न दिखायी देने लगे थे। सन् 1922 में दसवीं कक्षा में पहुँचे और सभी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करते हुए रॉबर्ट्सन कॉलेज, जबलपुर से बी0 ए0 तथा सन् 1929 में प्रयाग विश्वविद्यालय से आपने हिन्दी में एम0 ए0 की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। आपको एक प्रतिभाशाली छात्र के रूप में प्रयाग विश्वविद्यालय ने 'हॉलैण्ड मेडल' से सम्मानित किया और विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक पद पर नियुक्ति कर दी। सन् 1966 ई0 में आपने हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से अवकाश ग्रहण किया। आप रूस सरकार के विशेष आमन्त्रण पर मास्को विश्वविद्यालय में लगभग एक वर्ष तक शिक्षण-कार्य भी किया था।

आपको नागपुर विश्वविद्यालय की ओर से 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' विषय पर पी-एच0 डी0 की उपाधि दी गयी। 'चित्ररेखा' काव्य-संग्रह पर देव पुरस्कार, 'सप्त किरण' एकांकी-संग्रह पर 'अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन पुरस्कार', हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से 'साहित्यवाचस्पति' उपाधि, मध्य प्रदेश शासन परिषद् से 'विजय पर्व' नाटक पर प्रथम पुरस्कार तथा भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से आपको सम्मानित किया गया। आपका निधन 5 अक्टूबर, सन् 1990 ई0 को प्रयाग में हुआ।

कृतियाँ—वर्मा जी की रचनाएँ सन् 1922 से प्रारम्भ हुई थीं। आपके प्रमुख एकांकी-संग्रह अग्रलिखित हैं—पृथ्वीराज की आँखें (सन् 1938), रेशमी टाई (1941 ई0), रूप रंग (1951 ई0), चारुमित्रा, कौमुदी महोत्सव, चार ऐतिहासिक एकांकी (1950 ई0), दीपदान, रजत रश्मि, विभूति, रिमझिम, पाञ्चजन्य, बापू, इन्द्रधनुष आदि। 'बादल की मृत्यु' आपका सर्वप्रथम एकांकी नाटक था। इसके बाद आपने क्रमशः 'दस मिनट', 'नहीं का रहस्य', 'चम्पक' और 'ऐक्ट्रेस' आदि एकांकी नाटकों की रचना की और इसके बाद आपका एकांकीकार व्यक्तित्व आधुनिक हिन्दी नाट्य साहित्य का प्रकाश-स्तम्भ हो गया।

वर्मा जी ने 70 से अधिक पुस्तकों की रचना की है। आपकी अन्य कृतियाँ इस प्रकार हैं—

वीर हम्मीर (काव्य–सन् 1922 ई0), चित्तौड़ की चिता (काव्य–सन् 1929 ई0), अंजलि (काव्य–सन् 1930 ई0), चित्ररेखा (कविता–सन् 1936 ई0), जौहर (कविता-संग्रह–सन् 1951 ई0), एकलव्य, उत्तरायण, रूपराशि, चन्द्रकिरण आदि।

साहित्यिक अवदान–'रेशमी टाई' के उपरान्त डॉ0 वर्मा के कृतित्व में एक विशेष धारा ऐतिहासिक एकांकियों की विकसित हुई, जिसमें डॉ0 रामकुमार वर्मा एक ऐसे आदर्शवादी कलाकार के रूप में नाट्य-जगत् के सामने आये, जिसमें उनके सांस्कृतिक और साहित्यिक मान्यताओं का सुन्दरतम समन्वय स्थापित हुआ है। आपने सामाजिक, वैज्ञानिक, पौराणिक एवं ऐतिहासिक सभी प्रकार के एकांकियों पर लेखनी चलायी है। अन्य विधाओं की अपेक्षा एकांकी के क्षेत्र में आपको पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है; तभी तो आधुनिक हिन्दी एकांकी के आप जनक कहे जाते हैं। एकांकी की दिशा में आप पर इब्सन, मैटरलिंक, चेखव आदि का विशेष प्रभाव पड़ा है। आपके एकांकियों की भाषा सरल तथा नाटकीयता से ओतप्रोत है। रंगमंच की दृष्टि से आपकी एकांकियाँ पूर्ण सफल हैं। ♦

दीपदान

पात्र-परिचय

कुँवर उदयसिंह	:	चित्तौड़ के स्वर्गीय महाराणा साँगा का सबसे छोटा पुत्र। राज्य का उत्तराधिकारी। आयु 14 वर्ष।
चन्दन	:	धाय माँ पन्ना का पुत्र। आयु 13 वर्ष।
बनवीर	:	महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज का दासी-पुत्र। आयु 32 वर्ष।
कीरत	:	जूठी पत्तल उठानेवाला। आयु 40 वर्ष।
पन्ना	:	कुँवर उदयसिंह का संरक्षण करनेवाली धाय। चन्दन की माँ। आयु 30 वर्ष।
सोना	:	रावल सरूपसिंह की अत्यन्त रूपवती लड़की। कुँवर उदयसिंह के साथ खेलनेवाली। आयु 16 वर्ष।
सामली	:	अन्तःपुर की परिचारिका। आयु 28 वर्ष।

काल

सन् 1536 ई0

समय-रात्रि का दूसरा पहर

स्थान

कुँवर उदयसिंह का कक्ष, चित्तौड़

(कक्ष में पूरी सजावट है। दरवाजों पर रेशमी परदे पड़े हैं। एक पार्श्व में उदयसिंह की शय्या है। सिरहाने पन्ना के बैठने का स्थान है।)

(नेपथ्य में नारियों की सम्मिलित नृत्य-ध्वनि और गान जो धीरे-धीरे हल्का होता जाता है।)

उदयसिंह : (दौड़ता हुआ आता है, पुकारता है।) धाय माँ, धाय माँ!

पन्ना : (भीतर से आती हुई) क्या है, कुँवर जी! (देखकर) अरे, रात हो गयी और तुमने अभी तक तलवार म्यान में नहीं रखी?

उदयसिंह : धाय माँ, देखो न कितनी सुन्दर-सुन्दर लड़कियाँ नाच रही हैं। गीत गाती हुई तुलजा भवानी के सामने नाच रही हैं। चलो देखो न।

पन्ना : मैं नहीं देख सकूँगी लाल!

उदयसिंह : नहीं धाय माँ, थोड़ी देर के लिए चलो न!

पन्ना : नहीं कुँवर जी, मुझे नाच देखना अच्छा नहीं लगता।

उदयसिंह : क्यों नहीं अच्छा लगता? मैं तो नाचनेवाली लड़कियों को बड़ी देर तक देखता रहा और वे भी तो मुझे बड़ी देर तक देखती रहीं, मैं कितना अच्छा हूँ!

पन्ना : बहुत अच्छे हो। तुम तो चित्तौड़ के सूरज हो। महाराणा साँगा जी के छोटे कुँवर जी। सूरज की तरह तुम्हारा उदय हुआ है। तभी तो तुम्हारा नाम कुँवर जी उदयसिंह रखा गया है।

उदयसिंह : (हँसकर) अच्छा, यह बात है! पर क्या रात में भी सूरज का उदय होता है? मैं तो रात में भी हँसता-खेलता रहता हूँ!

पन्ना : दिन में तो चित्तौड़ के सूरज हो, कुँवर जी! और रात में तुम राजवंश के दीपक हो! महाराणा साँगा के कुल-दीपक!

उदयसिंह : कुल-दीपक! कहीं तुम मुझे दान न कर देना, धाय माँ! वे नाचनेवाली लड़कियाँ तुलजा भवानी की पूजा में दीपदान करके ही नाच रही हैं। वे दीपक छोटे-से कुण्ड में कैसे नाचते हैं, (मचले हुए स्वर में) चलो न धाय माँ! तुम उनका दीपदान देख लो। जिस तरह उनके दीपक नाचते हैं उसी तरह वे भी नाच रही हैं।

पन्ना : मैं इस समय कुछ भी नहीं देखूँगी। कुँवर जी!

उदयसिंह : (रूठकर) तो जाओ, मैं भी नहीं देखूँगा। मैं उदयसिंह भी नहीं बनूँगा और कुल-दीपक भी नहीं। कुछ नहीं बनूँगा।

पन्ना : रूठ गये। कुँवर जी, रूठने से राजवंश नहीं चलते। देखो, तुम्हारे कपड़ों पर धूल छा रही है। दिन भर तुम तलवार का खेल खेलते रहे हो। थक गये होगे। जाओ, सो जाओ। मैं तुम्हारी तलवार अलग रख दूँगी।

उदयसिंह : (रूठे हुए स्वर में) मैं तलवार के साथ ही सो जाऊँगा।

पन्ना : अभी वह समय नहीं आया, कुँवर जी! चित्तौड़ की रक्षा में तुम्हें तलवार के साथ ही सोना पड़ेगा।

उदयसिंह : (रूखे स्वर में) तुम्हें तलवार से डर लगता है?

पन्ना : तलवार से डर! चित्तौड़ में तलवार से कोई नहीं डरता, कुँवर जी! जैसे लता में फूल खिलते हैं वैसे ही यहाँ वीरों के हाथों में तलवार खिलती है।

उदयसिंह : (उसी तरह रूखे स्वर में) अब मेरा मन बहलाने लगीं। तुम नाच देखने नहीं चलती, तो मैं ही अकेला चला जाऊँगा। मैं जाता हूँ। (जाने को उद्यत होता है)।

पन्ना : नहीं कुँवर जी! तुम कभी रात में अकेले नहीं जाओगे। चारों तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं। किसी समय भी तुम्हें डस सकते हैं।

उदयसिंह : सर्प! कैसे सर्प!

पन्ना : तुम नहीं समझोगे, कुँवर जी! जाकर सो जाओ। थक गये होगे। भोजन के लिए मैं जगा लूँगी।

उदयसिंह : नहीं माँ, आज न भोजन करूँगा और न अपनी शय्या पर ही सोऊँगा। (प्रस्थान के लिए उद्यत)

पन्ना : (रोकते हुए) सुनो, सुनो कुँवर जी!

(उदयसिंह का प्रस्थान)

पन्ना : चले गये! कुँवर का रूठना भी मुझे अच्छा लगता है। मना लूँगी। नाच, गान, दीपदान इसी से चित्तौड़ की रक्षा होगी? चित्तौड़ में यह बहुत हो चुका। और अब तो बनवीर का राज्य है।

(नूपुर-नाद करते हुए एक किशोरी का प्रवेश)

सोना : धाय माँ को प्रणाम।

पन्ना : कौन?

सोना : मैं हूँ, सोना। गवल सरूपसिंह की लड़की। कुँवर जी कहाँ हैं?

पन्ना : वे थक गये हैं। सोना चाहते हैं।

सोना : सोना चाहते हैं। तो मैं भी तो सोना हूँ।

(अट्टहास)

पन्ना : चुप रह सोना! कुँवर जी रूठकर चले गये हैं। तुम लोग कुँवर को नाच-गाने की ओर खींचना चाहती हो।

सोना : क्या तुलजा भवानी के सामने नाचना कोई बुरी बात है! आज हम लोगों ने दीपदान किया और मनभर नाचा, यों (नाचती है) कुँवर भी तो बड़ी देर तक हमारा नाच देखते रहे। मैं भी उनको देखकर बहुत नाची। उनको हमारा नाच बहुत अच्छा लगा! मुझे भी उनको देखकर बहुत अच्छा लगा! देखो, पैरों की यह ताल (नूपुर की झनकार)।

पन्ना : बस, बस, सोना। अगर तू रावल जी की लड़की न होती तो .....।

सोना : कटार भोंक देतीं! कटार! (अट्टहास करती है) धाय माँ, तुमने उदयसिंह के सामने तो अपने पुत्र चन्दन को भी भुला दिया।

पन्ना : रहने दे। जानती नहीं बनवीर का राज्य है।

सोना : ओहो, बनवीर! उन्हें श्री महाराज बनवीर कहो। हमारे लिये वे एक रेशम की झूल लाये थे। उसे सिर से ओढ़कर नाचने से ऐसा लगता था, जैसे मकड़ी के जाले के आर-पार चन्द्रमा की किरणें थिरक रही हैं। हाँ .....

पन्ना : बहुत नाचती हो। बनवीर की तुम पर बड़ी कृपा है।

सोना : द्रौपदी के चीर की तरह! आज प्रातःकाल उन्होंने मुझे बुलाया और कहा .....धाय माँ! तुम बुरा तो नहीं मानेगी?

पन्ना : मैं! क्यों बुरा मानूँगी?

सोना : उन्होंने कहा, महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बनकर बैठ गयी हैं। अरावली पहाड़! (हँसती है) तो तुम लोग बनास नदी बनकर बहो न! खूब नाचो, गाओ। यों आज कोई उत्सव का दिन नहीं था, फिर भी उन्होंने कहा मेरे बनवाये हुए मयूर-पक्ष कुण्ड में दीपदान करो। मालूम हो, जैसे मेघ पानी-पानी हो गये हों और बिजलियाँ टुकड़े-टुकड़े हो गयी हों।

पन्ना : बड़ी उमंग में हो आज!

सोना : दीपकों के साथ उमंग भी लौ देने लगी है, धाय माँ! सारा जीवन ही एक दीपावली का त्योहार बन गया है।

पन्ना : तो यही त्योहार मना रही हो तुम?

सोना : मैं ही क्या, सारे नगर-निवासी यह त्योहार मना रहे हैं। नहीं मना रही हो तो तुम! धाय माँ! पहाड़ बनने से क्या होगा? राजमहल पर बोझ बनकर रह जाओगी बोझ, और नदी बनो तो तुम्हारा बहता हुआ बोझ, पत्थर भी अपने सिर पर धारण करेंगे, आनन्द और मंगल तुम्हारे किनारे होंगे, जीवन का प्रवाह होगा, उमंगों की लहरें होंगी जो उठने में गीत गायेंगी, गिरने में नाच नाचेंगी।

पन्ना : बनवीर के अनुग्रह ने तुम्हें पागल बना दिया है सोना!

सोना : धाय माँ! पागल कौन नहीं? महाराजा विक्रमादित्य अपने सात हजार पहलवानों के साथ पागल हैं। मल्ल-क्रीड़ा ही तो उनका पागलपन है। महाराज बनवीर, महाराणा विक्रमादित्य की आत्मीयता में पागल हैं। सारा नगर आज के त्योहार में पागल है। तुम कुँवर जी उदयसिंह के स्नेह में पागल हो और मैं? (हँसकर) मेरी कुछ न पूछो, धाय माँ मैं तो इन सबके पागलपन में पागल हूँ। तुम चाहे जो कहो! हाँ, तो कुँवर जी उदयसिंह कहाँ हैं?

पन्ना : कुँवर उदयसिंह को छोड़ो, सोना! वे बहुत थक गये हैं। अब सो रहे होंगे। तुम जाओ। यहाँ कहीं तुम्हारा पागलपन कम न हो जाय।

सोना : मेरा पागलपन? धाय माँ, पागलपन कहीं कम होता है? पहाड़ बढ़कर कभी छोटे हुए हैं? नदियाँ आगे बढ़कर कभी लौटी हैं? फूल खिलने के बाद कभी कली बने हैं? सब आगे बढ़ते हैं। नहीं बढ़ती हो तो सिर्फ तुम। सदा एक-सी।

पन्ना : सोना! मुझे किसी से ईर्ष्या नहीं है। मैं जैसी हूँ। राजसेवा में जीवन जा रहा है—यही मेरे भाग्य की बात है।

सोना : भाग्य! भाग्य तो सबके होता है, धाय माँ! नूपुर मेरे पैरों में पड़े हैं तो इनका भी भाग्य है। मेरे पैरों की गति में गीत गाते हैं, तो वह भाग्य है, मेरे आगमन का सन्देश पहले ही पहुँचा देते हैं तो वह भी इनका भाग्य

है। भाग्य तो सबके होता है, धाय माँ! तुम नगर के उत्सव में भाग नहीं ले रही हो, न लो। महाराज बनवीर का साथ नहीं दे रही हो, न दो! मैं कौन होती हूँ बीच में बोलनेवाली!

पन्ना : तो क्या मेरे उत्सव में जाने और न जाने का सम्बन्ध बनवीर की इच्छा से है?

सोना : कुँवर जी को ही भेज देतीं।

पन्ना : कैसे भेज देती? इतने आदमियों के बीच उसे कैसे भेज देती? महाराणा साँगा के वंश के एक वही तो उजाले हैं। महाराज रतनसिंह तीन ही वर्ष राज करके सूर्यलोक चले गये। विक्रमादित्य भी बनवीर की कूटनीति से अधिक दिनों तक .....।

सोना : धाय माँ, तुम विद्रोह की बात करती हो।

पन्ना : आँधी में आग की लपटें तेज ही होती हैं, सोना! तुम भी उसी आँधी में लड़खड़ाकर गिरोगी। तुम्हारे सारे नूपुर बिखर जायँगे। न जाने किस हवा का झोंका तुम्हारे इन गीत की लहरों को निगल जायगा। चित्तौड़ रास-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना-जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं।

सोना : (क्रोध से चीखकर) धाय माँ!

पन्ना : तोड़ो ये नूपुर! यहाँ का त्योहार आत्म-बलिदान है। यहाँ का गीत मातृभूमि की वेदना का गीत है। उसे सुनो और समझो।

सोना : (शान्त स्वर में) समझ लिया, धाय माँ!

पन्ना : तो यहाँ से जाओ।

(सोना का धीरे-धीरे प्रस्थान। उनके नूपुर धीरे-धीरे बजते हुए दूर तक सुन पड़ते हैं।)

पन्ना : अँधेरी रात! यह रास-रंग!! नगर के सब लोगों का जमाव!!! कुँवर जी उदयसिंह के लिए बुलावा!!! यह सब क्या है?

चन्दन : (दूर से पुकारते हुए) माँ! माँ!!

पन्ना : क्या, मेरे लाल?

चन्दन : कुँवर जी कहाँ हैं, माँ।

पन्ना : रूठकर सो गये हैं?

चन्दन : उन्होंने भोजन कर लिया?

पन्ना : नहीं। तुम भोजन कर लो। मैं थोड़ी देर बाद उन्हें उठाकर बहलाकर भोजन करा दूँगी।

चन्दन : मुझे अकेले भोजन करना अच्छा न लगेगा, माँ!

पन्ना : भोजन कर लो मेरे चन्दन! मेरे लाल! सज्जा ने तुम्हारे लिए अच्छा भोजन बनाया है। तुम्हें अच्छी-अच्छी बातें सुनाती हुई भोजन करा देगी। मैं भी अभी आती हूँ। तुम्हारी माला टूट गयी थी उसी को ठीक कर रही हूँ। बस, थोड़े दाने और रह गये हैं।

चन्दन : माँ, कल कुँवर जी की माला को ठीक कर देना। वह भी टूट रही है। सोना ने उसे पकड़कर खींच दिया था।

पन्ना : अच्छा चन्दन! वह भी ठीक कर दूँगी।

(चन्दन का प्रस्थान)

(एकाएक घर की कुछ चीजों के गिरने की धमक! शीघ्रता से सामली का प्रवेश)

सामली : (चीखकर पुकारती हुई) धाय माँ, धाय माँ!

पन्ना : कौन, कौन, सामली?

सामली : (बिलखते हुए) धाय माँ, धाय माँ। कुँवर जी कहाँ हैं? कुँवर जी कहाँ हैं?

पन्ना : क्यों, कुँवर जी को क्या हुआ?

सामली : उनका जीवन संकट में है।

पन्ना : कहाँ! कैसे! यह तुम क्या कह रही हो?

सामली : उनका जीवन बचाओ, धाय माँ!

पन्ना : (चीखकर) सामली! कहाँ हैं कुँवर जी?

(अन्दर की तरफ भागती है)

सामली : (बिलखते हुए) हाय! सर्वनाश हो रहा है। क्या मेवाड़ को ऐसे ही दिन देखने थे? हाय! क्या हो रहा है? तुलजा भवानी! तुम चित्तौड़ की देवी हो। कैसे कहूँ कि तुम्हारे त्रिशूल में अब शक्ति नहीं रही। मेवाड़ का भाग्य .....

पन्ना : (फिर प्रवेश कर) सो रहा है। मेरा कुँवर सो रहा है। कहीं तो कुछ नहीं हुआ। कुँवर जी रूठ गये थे, वे तलवार लिये हुए भूमि पर ही सो गये। मेरे कुँवर जी को कुछ नहीं हुआ।

सामली : कुँवर जी अच्छे हैं। तुलजा भवानी कुशल करें। पर धाय माँ। महाराणा विक्रमादित्य जी की हत्या हो गयी।

पन्ना : (चीखकर) महाराणा की हत्या हो गयी? किसने की?

सामली : बनवीर ने। महाराणा सो रहे थे। उसने अवसर पाकर उनकी छाती में तलवार भोंक दी।

पन्ना : (चीखकर) हाय! महाराणा विक्रमादित्य जी! (सिसकने लगती है।)

सामली : बनवीर ने नगर भर में आज नाच-गाने का त्योहार मनवाया जिससे नगर-निवासियों का ध्यान नाच-रंग में ही रहे। मौका देखकर वह राजमहल गया। अन्तःपुर में वह आता-जाता था। किसी ने रोका नहीं, उसने महाराणा के कमरे में जाकर उनकी हत्या कर दी। (सिसकियाँ लेने लगती है।)

पन्ना : (स्थिर होकर) आज कुसमय रास-रंग की बात सुनकर मेरे मन में शंका हुई थी, इसलिए मैंने कुँवर जी को वहाँ जाने से रोक दिया था। सम्भव था कुँवर जी वहाँ जाते और बनवीर अपने सहायकों से कोई काण्ड रच देता।

सामली : इसलिए मैं दौड़ी हूँ धाय माँ! लोगों ने बनवीर को कहते सुना है कि वह कुँवर जी उदयसिंह को भी सिंहासन का अधिकारी समझकर जीवित रहने नहीं देगा। वह निष्कण्टक राज करेगा, धाय माँ।

पन्ना : विलासी और अत्याचारी राजा कभी निष्कण्टक राज्य नहीं कर सकता।

सामली : लेकिन रक्त से भींगी तलवार लेकर वह सीना ताने हुए अपने महल में गया है।

पन्ना : लोगों ने उसे पकड़ा नहीं? सैनिक चुपचाप देखते ही रहे?

सामली : सैनिकों को उसने अपनी तरफ मिला लिया है। लोग उससे डरते हैं। महाराणा विक्रमादित्य का राज्य भी तो ऐसा नहीं था कि लोग उनसे प्रेम रखते। उनके पहलवानों की सहायता से राज्य नहीं चल सकता। सभी सामन्त महाराणा से असन्तुष्ट थे।

पन्ना : अब क्या होगा?

सामली : थोड़ी देर बाद ही वह कुँवर जी को मारने आयेगा, आज की रात बहुत अशुभ है। आज की रात में ही वह अपने को पूरा महाराणा बना लेना चाहता है। किसी तरह से भी हो कुँवर जी की रक्षा होनी चाहिए, धाय माँ!

पन्ना : कुँवर जी की रक्षा.....(सोचते हुए) कुँवर जी की रक्षा! अवश्य होगी.....अवश्य होगी। अब मेवाड़ का उत्तराधिकारी एक यही तो राजपूत रक्त है। दासी-पुत्र बनवीर को चित्तौड़ सहन नहीं कर सकेगा।

सामली : यह तो आगे की बात है पर तुम कुँवर जी की रक्षा किस तरह करोगी?

पन्ना : मैं? इस अँधेरी रात में ही उसे लेकर कुम्भलगढ़ भाग जाऊँगी।

सामली : और चन्दन कहाँ रहेगा?

पन्ना : जहाँ भगवती तुलजा उसे रखेगी। मेरे महाराणा का नमक मेरे रक्त से भी महान् है। नमक से रक्त बनता है, रक्त से नमक नहीं।

सामली : धन्य हो, धाय माँ! पर तुम नहीं भाग सकोगी। तुम महलों से निकल भी नहीं सकोगी। आते समय मैंने देखा था कि बनवीर के सैनिक तुम्हारा महल घेरने को आ रहे थे। एक ओर से तो तुम्हारा महल घिर ही चुका था।

पन्ना : हा! भगवान् एकलिंग! अब क्या होगा?

सामली : जैसे भी हो कुँवर जी की रक्षा तुम्हें करनी ही है।

पन्ना : मुझे सैनिकों की सहायता नहीं मिल सकती?

सामली : सैनिक तो उसके हैं। धाय माँ!

पन्ना : और सामन्त?

सामली : उनमें इतना साहस नहीं है।

पन्ना : (जोर से) दरवाजे पर कौन है?

(कीरत का प्रवेश)

कीरत : अन्नदाता! कीरत बारी हौं। धाय माँ के चरन लागौं।

पन्ना : कीरत! तुम हो? बाहर तो कोई नहीं है?

कीरत : अन्नदाता? बाहर सिपाहियों का डेरा लग रहा है। जान नहीं पड़ता अन्नदाता कि आधी रात को ये क्या हो रहा है। पेड़े में किसी का भी पैसारा नहीं हो पाता। मैं तो चरन-सेवक हूँ, इससे कोई कुछ बोला नहीं।

पन्ना : तो तुम बेखटके चले आये?

कीरत : अन्नदाता, मैं तो जूठी पत्तल उठाता हूँ, कोई माल-मत्ता तो मेरे पास नहीं। टोकरी है और उसमें पत्ते हैं। कुँवर जी जू ने ब्यालू कर ली धाय माँ? मैं जूठन पा लूँ?

पन्ना : नहीं।

कीरत : कुँवर जू जुग-जुग जियें धाय माँ! जब से कुँवर जू बूँदी से आये हैं तब से सगर महल में उजियारा फैल गया है। राणा विक्रमादित्य जब हर-भजन करेंगे तो धाय माँ अपना चौंर छतर कुँवर जू को ही तो सौंपेंगे। सच जानो धाय माँ, मैं तो उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूँ। धाय माँ कुछ सोच रही हैं?

पन्ना : (चौंककर) ऐं! हाँ, मैं सोच रही हूँ। (सामली से) तुम बाहर जाकर देखो सिपाही कहाँ-कहाँ खड़े हैं और कितने सिपाही हैं।

सामली : बहुत अच्छा, धाय माँ! मैं जाती हूँ।

(प्रस्थान)

पन्ना : तो कीरत! तुम कुँवर जी को बहुत प्यार करते हो?

कीरत : अन्नदाता! प्यार कहने में जबान पर कैसे आवे? वो तो दिल की बात है। मौके पै ही देखा जाता है और कहने को तो मैं कह चुका हूँ कि उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूँ।

पन्ना : तो वह मौका आ गया है, कीरत।

कीरत : मौका! कैसा मौका?

पन्ना : कुँवर जी को बचाने का।

कीरत : कौन से सिर पै भैरू बाबा की आँख चढ़ी है जो कुँवर जी का बाल बाँका कर सके? और कीरत के रहते? धाय माँ, हँसी तो नहीं कर रही हैं? अन्नदाता।

पन्ना : नहीं कीरत, हँसी का समय नहीं है। कुँवर जी के प्राण संकट में हैं।

कीरत : हुकुम दें, अन्नदाता।

पन्ना : अच्छा तो सुनो। तुम बारी हो, तुम्हें बाहर जाने से कोई नहीं रोकेगा। तुम तो टोकरी में जूठी पत्तल उठा के जाते ही हो।

कीरत : ठीक कहती हैं, अन्नदाता। आते वक्त भी किसी ने नहीं रोका।

पन्ना : तो तुम कुँवर जी को टोकरी में लिटाकर उन पर गीली पत्तलें डालकर महल से बाहर निकल जाओ।

कीरत : वाह! अन्नदाता ने खूब सोचा! मैं ऐसे निकल जाऊँगा कि सिपाही लोग मुँह देखते ही रह जायँगे। तो कुँवर जी कहाँ हैं?

पन्ना : सो रहे हैं। आज भूमि पर ही सो गये। उन्हें धीरे से उठाकर अपनी टोकरी में सुला लेना। वे जागने न पायें।

कीरत : बहुत अच्छा अन्नदाता! कुँवर जी कहाँ हैं?

पन्ना : मेरे कमरे में नीचे ही सो गये हैं। तुम्हारी टोकरी तो काफी बड़ी है।

कीरत : अन्नदाता! आपके जस ने ही तो मेरी टोकरी बड़ी कर दी है। सारे राजमहल की पत्तलें छोटी टोकरी में कैसे आ सकती हैं? और अन्नदाता! आज तो बनवीर के साथ बहुत सामन्तों ने खाया है। मैंने भी सोचा आज बड़ी टोकरी ले चलूँ सो वो ही लाया हूँ।

पन्ना : और हाँ, कुँवर जी को लेकर तुम बेरिस नदी के किनारे मिलना! वहाँ जहाँ श्मशान है।

कीरत : ठीक है अन्नदाता! वहीं मिलूँगा। वहाँ मुझ पै किसी भी आदमी की नजर न पड़ेगी।

पन्ना : तो जाओ कीरत! आज तुम-जैसे एक छोटे आदमी ने चित्तौड़ के मुकुट को सँभाला है। एक तिनके ने राजसिंहासन को सहारा दिया है। तुम धन्य हो!

कीरत : अन्नदाता! धन्य तो आप हैं कि मुझको आपने ऐसी सेवा करने का काम सौंपा है। तो मैं चलूँ?

(सामली का प्रवेश)

सामली : धाय माँ! महल चारों तरफ से सिपाहियों से घिर गया। उत्तर की तरफ ही सात सिपाही हैं। बाकी तीनों तरफ बीस-बीस सिपाही पहरा दे रहे हैं। शायद उत्तर की तरफ के सिपाही बनवीर को लेने गये हैं।

पन्ना : कोई चिन्ता की बात नहीं, सामली! तू यहीं ठहरना मैं अभी आती हूँ। (कीरत से) चलो कीरत!

(दोनों का प्रस्थान)

(पन्ना का प्रवेश)

पन्ना : अब ठीक है। कुँवर जी की रक्षा हो गयी।

सामली : पर एक बात है, धाय माँ!

पन्ना : क्या?

सामली : बनवीर यहाँ जरूर आयेंगे। वे तुम्हारे महल में कुँवर जी की खोज करेंगे। जब वे कुँवर जी को न पायेंगे और तुमसे पूछेंगे तो तुम क्या उत्तर दोगी?

पन्ना : कह दूँगी कि मैं नहीं जानती।

सामली : इससे वे नहीं मानेंगे। क्रोध में आकर अगर उन्होंने तुम्हारे ऊपर तलवार चला दी तो कुँवर जी तुम्हारे बिना कैसे जियेंगे?

पन्ना : मुझे उसकी चिन्ता नहीं है, सामली!

सामली : पर चिन्ता कुँवर जी की है। तुम्हारे बिना वे भी तो जीवित नहीं रहेंगे। फिर तुम्हारा बलिदान चित्तौड़ के किस काम आयेगा?

पन्ना : सचमुच कुँवर जी मेरे बिना नहीं जियेंगे। थोड़ी-सी बात पर तो रूठ जाते हैं। मुझे न पाकर उनका क्या हाल होगा?

सामली : किसी तरह बनवीर को धोखा नहीं दे सकती?

पन्ना : दे सकती हूँ?

सामली : किस तरह?

पन्ना : कुँवर जी की शय्या पर किसी और को सुला दूँगी। वह क्रोध में अन्धा रहेगा ही। पहचान भी नहीं सकेगा कि वह कौन सोया है?

सामली : तो कुँवर जी की शय्या पर किसे सुला दोगी?

पन्ना : किसे सुला दूँगी? (सोचकर) सामली मेरे हृदय पर वज्र गिर रहा है। मेरी आँखों में प्रलय का बादल घुमड़ रहा है। मेरे शरीर के एक-एक रोम पर बिजली तड़प रही है।

सामली : धाय माँ सँभल जाओ! ऐसी बातें न कहो। कुँवर जी की शय्या पर .....

पन्ना : सुला दूँगी। उसी को! सुला दूँगी जो मेरी आँखों का तारा है.....चन्दन.....चन्दन को सुला दूँगी सामली! (सिसकियाँ) चन्दन को सुला दूँगी। उस नन्हें-से लाल को हत्यारे की तलवार के नीचे रख दूँगी।

सामली : धाय माँ! ऐसा मत कहो। ऐसा मैं नहीं सुन सकूँगी।

(प्रस्थान)

पन्ना : चली गयी। कहती है, ऐसा मैं नहीं सुन सकूँगी। जो मुझे करना है, वह सामली सुन भी न सकेगी। भवानी! तुमने मेरे हृदय को कैसा कर दिया! मुझे बल दो कि मैं राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ। अपने लाल को दे सकूँ। यही राजपूतानी का व्रत है। यही राजपूतानी की मर्यादा है। यही राजपूतानी का धर्म है। मेरा हृदय वज्र का बना दो! माता के हृदय के स्थान पर पत्थर बना दो जिससे ममता के स्रोत बन्द हो जायँ। भवानी! मैं चित्तौड़ की सच्ची नारी बनूँ। (नेपथ्य में चन्दन का स्वर) माँ!.....माँ!.....माँ!

(चन्दन का प्रवेश)

चन्दन : माँ देखो, मेरे पैर में चोट लग गयी। यह रक्त निकल रहा है।

पन्ना : कहाँ रक्त निकल रहा है? लाओ देखूँ मेरे लाल! ओहो! अँगूठे में यह चोट कैसे लगी? रक्त निकल रहा है? कितना रक्त निकल रहा है! लाओ इसे बाँध दूँ। (अपनी साड़ी से कपड़े का टुकड़ा फाड़ती है।) पैर सीधा करो! हाँ ठीक .....इसे बाँध देती हूँ। (बाँधते हुए) यह चोट कैसे लगी, लाल?

चन्दन : मैं जैसे ही भोजन करके उठा माँ, सज्जा ने कहा कि महल के चारों तरफ सिपाही इकट्ठे हो रहे हैं। मैं देखने के लिए ऊपर के झरोखे में चढ़ गया। अँधेरे में कुछ दिखायी नहीं दिया। जैसे ही मैं नीचे कूदा एक टूटा हुआ शीशा अँधेरे में चुभ गया। कोई बात नहीं है माँ, रक्त तो निकला ही करता है। पर ये सिपाही महल के चारों तरफ क्यों इकट्ठे हो रहे हैं।

पन्ना : आज नाच-रंग का दिन है न! वही सब देखने के लिए आये होंगे या फिर सोना ने उन्हें बुलाया होगा। वह नीचे नाच रही होगी।

चन्दन : माँ! सोना अच्छी लड़की नहीं है। मैं कल उससे कहूँगा माँ कि कुँवर जी को अपना नाच न दिखाया करे। उनका मन आखेट करने में नहीं लगता।

पन्ना : मैं भी उसे समझा दूँगी, चन्दन!

चन्दन : कुँवर जी कहाँ हैं, माँ! आज भोजन में भी साथ नहीं चले।

पन्ना : कहीं सो रहे हैं।

चन्दन : तब से सो रहे हैं? माँ, कुँवर जी को ज्यादा नींद क्यों आती है? मैं देखूँ कहाँ सो रहे हैं।

पन्ना : बुरा मानकर कहीं सो रहे होंगे।

चन्दन : सोना ने ही उन्हें बुरा मानना सिखला दिया माँ! नहीं तो कुँवर जी पहले कभी बुरा नहीं मानते थे। खेल-खेल में भी बुरा नहीं मानते थे। साथ खेलते थे, साथ खाते थे। आज अकेले कुछ खाया भी नहीं गया माँ!

पन्ना : तो चलो चन्दन! मैं तुम्हें जी भर के खिला दूँ।

चन्दन : अब कुँवर जी के साथ ही कल खाऊँगा, माँ कल हम दोनों साथ बैठेंगे .....तुम प्रेम से परोस-परोसकर खिलाना। कल खूब खाऊँगा, माँ! कुँवर जी से भी ज्यादा। कहते हैं कि मैं चन्दन से ज्यादा खाता हूँ। अब कल से यह कहना भूल जायँगे। (हँसता है) क्यों माँ!

पन्ना : ठीक है, लाल!

चन्दन : माँ! अच्छी तरह से क्यों नहीं बोलती? और तुम्हारी आँखें.....तुम्हारी आँखों में पानी कैसा? माँ.....तुम्हारी आँखों में .....

पन्ना : कहाँ चन्दन! पानी कहाँ? और तुम्हारे अँगूठे से रक्त की धार बहे, मेरी आँखों से एक बूँद पानी भी न निकले?

चन्दन : ओह! माँ, तुम तो बातें करने में बड़ी अच्छी हो। जब मैं बड़ा होकर बहुत-सी जागीरें जीतूँगा, माँ! तो मैं तुम्हारे लिये एक मन्दिर बनवाऊँगा। देवी के स्थान पर तुमको बिठलाऊँगा और तुम्हारी पूजा करूँगा। तुम अपनी पूजा करने दोगी?

पन्ना : तुझसे मुझे ऐसी ही आशा है, चन्दन। अब बहुत बातें न करो, चन्दन? रात अधिक हो रही है, सो जाओ।

(कुछ आहट होती है)

चन्दन : माँ! माँ, देखो उस दरवाजे से कौन झाँक रहा है?

पन्ना : कीरत बारी होगा। तुम्हारा भोजन उठाने आया होगा। मैं देखती हूँ। (उठकर देखती है)

चन्दन : कोई और हो तो मैं अपनी तलवार लाऊँ!

पन्ना : (लौटती हुई) कोई नहीं है। महल में किसका डर है? लाल! तुम सो जाओ।

चन्दन : कहाँ सोऊँ! सज्जा तो अभी रसोईघर में ही होगी। मेरी शय्या ठीक न की होगी।

पन्ना : तो .....तो .....तुम कुँवर जी की शय्या पर सो जाओ। शय्या ठीक होने पर तुम्हें उस पर लिटा दूँगी।

चन्दन : तुम बहुत अच्छी हो, माँ! आज कुँवर जी की शय्या पर लेटकर देखूँ! अब तो मैं भी राजकुमार हो गया। (एकाएक स्मरण कर) पर मेरी माला! राजकुमार के गले में माला होती है न! तुमने मेरी टूटी माला गूँथ दी?

पन्ना : नहीं गूँथ पायी, लाल। सामली आ गयी थी।

चन्दन : कल गूँथ देना। भूलना नहीं माँ! (शय्या पर लेटता है) आहा माँ! कितनी नरम शय्या है। जी होता है, सदा इसी पर सोता रहूँ।

पन्ना : (चीखकर) चन्दन।

चन्दन : क्या हुआ माँ!

पन्ना : कुछ नहीं .....कुछ .....नहीं। आज मेरा जी कुछ अच्छा नहीं है। कभी-कभी कलेजे में शूल-सी उठती है। तुम सो जाओ तो मैं भी सो जाऊँगी।

चन्दन : मैं किसी वैद्य के यहाँ जाऊँ, माँ?

पन्ना : नहीं, वैद्य के पास इसकी दवा नहीं है। यह आप-से-आप उठती है और आप-से-आप शान्त हो जाती है। तुम सो जाओ.....मैं भी कुँवर को खिलाकर जल्दी सो जाऊँगी।

चन्दन : (चौंककर) माँ, एक काली छाया मेरे सिर के पास आयी, उसने मुझे मारने को तलवार उठायी? माँ वह काली छाया·····काली छाया·····

पन्ना : मैं तो तुम्हारे पास बैठी हूँ, लाल! यहाँ कौन-सी काली छाया आयेगी?

चन्दन : कोई छाया नहीं आयेगी माँ! पर न जाने क्यों नींद नहीं आ रही है। तुम मुझे कोई गीत सुना दो, सुनते-सुनते सो जाऊँ।

पन्ना : अच्छी बात है, मेरे लाल! मैं गीत ही गाऊँगी। अपने लाल को सुला दूँ।

(करुण स्वर से गीत गुनगुनाती है)

उड़ जा रे पंखेरूआ, साँझ पड़ी।
चार पहर बाटड़ली जोही मेड़याँ खड़ी ए खड़ी।
उड़ जा पंखेरूआ, साँझ पड़ी। डबडब भरिया नैन दिरिघड़ा
लग रई झड़ी ए झड़ी। उड़ जा रे पंखेरूआ, साझ पड़ी!!
तेरी फिकर हूँ भई दिवानी। मुसकल घड़ी ए घड़ी। उड़ जा पंखेरूआ·····!!

(धीरे-धीरे गाना समाप्त होता है)

पन्ना : (फिर पुकारती है) चन्दन!

(चन्दन के न बोलने पर पन्ना अलग हटकर जोर से सिसकी लेती है)

पन्ना : मेरा लाल सो गया। मैंने अपने लाल को ऐसी निद्रा में सुला दिया कि अब यह न उठेगा। (सिसकियाँ लेती है) ओह पन्ना! तूने अपने भोले बच्चे के साथ कपट किया है! तूने अंगारों की सेज पर अपने फूल-से लाल को सुला दिया है। तू सर्पिणी है। सर्पिणी जो अपने ही बच्चे को खा डालती है। जान-बूझकर अपने पुत्र की हत्या कराने जा रही है। हाय! अभागिन माँ! संसार में तेरा भी जन्म होने को था! (सिसकियाँ लेती है। फिर चन्दन को सम्बोधित करते हुए) लाल! तुम्हारी माला मैं नहीं गूँथ सकी। तुम्हारा जीवन अधूरा होने जा रहा है तो माला कैसे पूरी होती? (सिसकियाँ) आज तुम भूखे ही रह गये मेरे लाल! आज अन्तिम दिन मैं तुम्हें अपने हाथों से भोजन भी न करा सकी! तुम क्या जानो कि कल तुम और कुँवर साथ-साथ कैसे भोजन करोगे! कहते थे कल तुम परोसकर खिलाना। मैं अब किसे खिलाऊँगी, चन्दन! (सिसकियाँ) तुम्हारे अँगूठे से रक्त की धारा बही। अब हृदय से रक्त की धारा बहेगी तो मैं कैसे रोक सकूँगी! मेरे लाल! मेरे चन्दन! जाओ, यह रक्त-धारा अपनी मातृभूमि पर चढ़ा दो। आज मैंने भी दीपदान किया है। दीपदान! अपने जीवन का दीप मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है। ऐसा दीपदान भी किसी ने किया है! एक बार तुम्हारा मुख देख लूँ। कैसा सुन्दर और भोला मुख है! (सिसकियाँ लेती है।)

(एकाएक भड़भड़ाहट की आवाज होती है। हाथ में तलवार लिये बनवीर आता है।)

बनवीर : (मद्य पीने से उसके शब्द लड़खड़ा रहे हैं।) पन्ना!

पन्ना : महाराज बनवीर!

बनवीर : सारे राजपूताने में एक ही धाय माँ है पन्ना! सबसे अच्छी! मैं ऐसी धाय माँ को प्रणाम करने आया हूँ। (रुककर) ऐं, धाय माँ की आँखों में आँसू!

पन्ना : नहीं·····आँसू नहीं हैं। आज मेरे कुँवर बिना भोजन किये ही सो गये।

बनवीर : आज के दिन भोजन नहीं किया? अरे, आज तो उत्सव का दिन है। आनन्द का दिन है। (अट्टहास करता है) मेरे महल में तीन सौ सामन्तों ने भोजन किया। आज कीरत की टोकरी देखतीं। भोजन उठाते-उठाते वह जिन्दगी भर के लिए थक गया होगा। (हँसता है) जिन्दगी भर के लिए! तो कहाँ है कुँवर उदयसिंह? मैं उन्हें अपने हाथ से भोजन करा दूँ।

पन्ना : कुँवर सो गये हैं। वे किसी के हाथ से भोजन नहीं करते, मैं ही उन्हें खिला दूँगी।

बनवीर : धाय माँ हो न! पन्ना! आज तुमने सोना का नाच नहीं देखा! ओह! कितना अच्छा नाचती है। मैंने उससे कह दिया था कि वह कुँवर उदयसिंह को और धाय माँ को अपना नाच दिखला दे।

पन्ना : वह आयी थी। शायद तुम्हीं ने उसे भेजा था, पर कुँवर जी का जी अच्छा नहीं था, इसलिए मैंने उन्हें नहीं भेजा!

बनवीर : जी अच्छा नहीं था, और आज का दीपदान भी तुमने नहीं देखा।

पन्ना : मेरे लिये देखने की बात नहीं है, करने की बात है।

बनवीर : ठीक है, धाय माँ तो मंगल-कामनाओं की देवी है। वे दीपदान करके चित्तौड़ का कल्याण करेंगी। मैं भी चित्तौड़ का कल्याण करूँगा। एक बात और कहूँ, पन्ना! मैं तुम्हें मारवाड़ में एक जागीर देना चाहता हूँ। वहाँ तुम्हारे लिये तुलजा भवानी का मन्दिर बनेगा। मन्दिर! सारे लोग तुम्हें इतनी श्रद्धा से देखेंगे कि तुलजा भवानी में और तुममें कोई अन्तर भी न होगा। तुम्हीं देवी के उस मन्दिर में रहोगी। लोग तुम्हारी पूजा करेंगे।

पन्ना : (चीखकर) बनवीर!

बनवीर : (अट्टहास कर) महाराज बनवीर नहीं कहा! मेरे कहने भर से तुम देवी हो गयी। महाराज बनवीर को बनवीर कहने लगी! (हँसता है) देवी को प्रणाम। देखो। अब तुम्हें मोह-ममता से दूर रहना होगा। तुम कुँवर उदयसिंह को मुझे दे दोगी और मैं उसे यह तलवार दूँगा।

(तलवार खींच लेता है)

पन्ना : ऐं, यह तलवार! इस पर रक्त क्यों लगा है?

बनवीर : रक्त तो तलवार की शोभा है, पन्ना! वह अनन्त सुहाग से भरी है। यह तो उसके सिन्दूर की रेखा है। बिना रक्त के तलवार भी कभी तलवार कहला सकती है?

पन्ना : यह तलवार म्यान में रख लो, महाराज!

बनवीर : क्या तुम्हें भय लगता है। चित्तौड़ में तलवार से किसी को भय नहीं लगता। धाय माँ होने पर तुममें इतनी ममता भर गयी कि तलवार नहीं देख सकती? पन्ना! तलवार आसानी से म्यान के भीतर नहीं जाती।

पन्ना : आधी रात हो चुकी है, महाराज बनवीर! विश्राम करो।

बनवीर : विश्राम मैं करूँ? बनवीर! जिसे राजलक्ष्मी को पाने के लिए दूर तक की यात्रा करनी है। मैं अपने साथ कुँवर उदयसिंह को भी ले जाना चाहता हूँ।

पन्ना : यह नहीं होगा·····यह नहीं होगा, महाराज बनवीर।

बनवीर : जागीर नहीं चाहतीं?

पन्ना : नहीं।

बनवीर : तो उदयसिंह के बदले जो माँगो दिया जायगा।

पन्ना : राजपूतानी व्यापार नहीं करती, महाराज! वह या तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर।

बनवीर : दो में से किसी पर भी तुम नहीं चढ़ सकोगी। तुम्हारा महल सैनिकों से घिरा है।

पन्ना : सैनिकों को किसने आज्ञा दी? महाराज विक्रमादित्य·····

बनवीर : (बीच में ही) वे अब इस संसार में नहीं हैं। पन्ना! उन्होंने रक्त की नदी पार कर ली है। उसी रक्त की लहर मेरी तलवार पर है।

पन्ना : ओह बनवीर! हत्यारा बनवीर!

बनवीर : महाराणा बनवीर को हत्यारा बनवीर नहीं कह सकती, हत्यारा बनवीर कहनेवाली जीभ काट ली जायगी।

पन्ना : तो लो मेरी जीभ काट लो। और यहाँ से चले आजो। महाराणा विक्रमादित्य·····।

बनवीर : बार-बार विक्रमादित्य का नाम क्यों लेती हो? प्रेतों और पिशाचों को वह नाम लेने दो। यदि मेरा नाम लेना है तो जय-जयकार के साथ नाम लो।

पन्ना : धिक्कार है बनवीर! तुम्हारी माँ ने तुम्हें जन्म देते ही क्यों न मार डाला।

बनवीर : चुप रह धाय! कहाँ है उदयसिंह?

पन्ना : तू उदयसिंह को छू भी नहीं सकता। नीच! नारकी! महाराणा विक्रमादित्य की हत्या के बाद तू उदयसिंह को देख भी नहीं सकता।

बनवीर : मैं नहीं देखूँगा, मेरी तलवार देखेगी। विक्रम के रक्त से सनी हुई तलवार अब उदयसिंह के रक्त से धोयी जायगी।

पन्ना : ओह क्रूर बनवीर! तुम तो उदयसिंह के संरक्षक थे। रक्षा के बदले क्या तुम उसकी हत्या करोगे? नहीं·····नहीं, यह नहीं हो सकता, यह नहीं हो सकता है। महाराज बनवीर! तुम राज्य करो चित्तौड़ पर, मेवाड़ पर, सारे राजपूताने पर राज्य करो, पर कुँवर उदयसिंह को छोड़ दो। मैं उसे लेकर संन्यासिनी हो जाऊँगी। तीर्थ में वास करूँगी। तुम्हारा मुकुट तुम्हारे माथे पर रहे, पर मेरा कुँवर भी मेरी गोद में रहे। बनवीर! महाराज बनवीर मुझे यह भिक्षा दे दो।

बनवीर : दूर हट दासी! यह नाटक बहुत देख चुका हूँ। उदयसिंह की हत्या ही तो मेरे राजसिंहासन की सीढ़ी होगी। जब तक वह जीवित है तब तक सिंहासन मेरा नहीं होगा। तू मेरे सामने से दूर हट जा।

पन्ना : मैं नहीं हटूँगी! अपने कुँवर की शय्या से दूर नहीं हटूँगी।

बनवीर : उदयसिंह को सुला दिया है जिससे उसे मरने का कष्ट न हो। उसका मुख ढक दिया है। वाह री धाय माँ! बालक के मरने में भी ममता का ध्यान रखती है। (तीव्रता से) शय्या से दूर हट, पन्ना। मैं उसे चिर निद्रा में सुला दूँ।

पन्ना : (साहस से) नहीं, ऐसा नहीं होगा, क्रूर, नराधम, नारकी! ले, मेरी कटार का प्रसाद ले। (आक्रमण करती है, उसकी चोट बनवीर की ढाल पर सुन पड़ती है।)

बनवीर : (क्रूर अट्टहास करता है) ह ह ह ह! दासी क्षत्राणी! कर लिया कटार का वार? यह कटार मेरे हाथ में है। अब किससे वार करेगी। अब तुझे भी समाप्त कर दूँ? लेकिन स्त्री पर हाथ नहीं उठाऊँगा।

पन्ना : अबोध सोते हुए बालक पर हाथ उठाते हुए तेरा हृदय तुझे नहीं धिक्कारता? पापी।

बनवीर : (शय्या के समीप जाकर) यही है, यही है मेरे मार्ग का कण्टक। आज मेरे नगर में स्त्रियों ने दीपदान किया है। मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा। यमराज! लो इस दीपक को। यह मेरा दीपदान है।

(तलवार से उदय के धोखे में चन्दन पर जोर से तलवार का प्रहार करता है। पन्ना जोर से चीखकर मूर्च्छित हो जाती है। कमरे में मन्द लौ से दीपक जलता रहता है।)

अभ्यास प्रश्न

● समीक्षात्मक प्रश्न

1. 'दीपदान' एकांकी की कथावस्तु या कथानक संक्षेप में लिखिए।

अथवा

पाठ्य-पुस्तक में संकलित डॉ० रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित एकांकी का सारांश (कथा-सार) अपने शब्दों में लिखिए।

2. 'दीपदान' एकांकी के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

सिद्ध कीजिए कि 'पन्ना धाय के चरित्र में माँ की ममता, राजपूतानी का रक्त, राजभक्ति और आत्म-त्याग की भावना है।'

अथवा

'अपने जीवन का दीप मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है'—इस कथन के आधार पर पन्ना धाय के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

3. 'दीपदान' एकांकी के कथा-संगठन पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
4. 'बनवीर की महत्त्वाकांक्षा ने उसे हत्यारा बना दिया है'—इस कथन के आधार पर बनवीर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'दीपदान' एकांकी के आधार पर बनवीर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. 'दीपदान' एकांकी के आधार पर सोना का चरित्र-चित्रण कीजिए।
6. सामली तथा कीरत बारी के विषय में एक-एक अनुच्छेद लिखिए।
7. डॉ० रामकुमार वर्मा के जीवन एवं प्रमुख कृतियों का परिचय दीजिए।
8. एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'दीपदान' एकांकी की समीक्षा कीजिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'दीपदान' एकांकी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
2. 'दीपदान' एकांकी के कौन-कौन स्थल आपको प्रिय लगते हैं और क्यों?
3. पन्ना उदयसिंह की शय्या पर चन्दन को क्यों सुला देती है?
4. दीपदान उत्सव का आयोजन क्यों और किसने कराया था?
5. बनवीर द्वारा उदयसिंह के विरुद्ध रचे जानेवाले षड्यन्त्र का आभास पन्ना को कैसे हुआ?
6. 'दीपदान' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर अपना तर्क दीजिए।
7. चन्दन की हत्या कराने के अतिरिक्त और क्या-क्या उपाय उदयसिंह को बचाने के लिए किये जा सकते थे?
8. उदयसिंह और सोना के बार-बार आग्रह करने पर भी पन्ना दीपदान उत्सव देखने क्यों नहीं गयी?
9. क्या यह बात आपको ठीक लगती है कि 'चन्दन की हत्या' कराकर पन्ना ने सर्पिणी का आचरण किया है, वह कलंकिनी है?
10. पन्ना बनवीर पर कब और किससे आक्रमण करती है?

● वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर के सम्मुख सही (✓) का चिह्न लगाइये–

1. **इस एकांकी के दीपदान शीर्षक का सबसे उपयुक्त कारण है–**
   (अ) दीपदान का महोत्सव ही इसका प्रधान कार्य है। ( )
   (ब) पन्ना अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा के लिए अपने कुल के दीपक चन्दन का दान करती है। ( )
   (स) चित्तौड़ की स्त्रियाँ नृत्य और गान के साथ दीपदान करती हैं। ( )
2. **दीपदान महोत्सव का आयोजन इसलिए किया गया था, क्योंकि–**
   (अ) बनवीर विलासी और नृत्य-गान का प्रेमी था। ( )
   (ब) बनवीर उदयसिंह की हत्या करना चाहता था। ( )
   (स) बनवीर तुलजा भवानी को प्रसन्न करना चाहता था। ( )
3. **उदयसिंह की शय्या पर चन्दन को पन्ना सुला देती है, क्योंकि–**
   (अ) उदयसिंह की रक्षा करना चाहती थी। ( )
   (ब) चन्दन से उसे प्रेम नहीं था। ( )
   (स) उसे विश्वास नहीं था कि बनवीर ऐसा करेगा। ( )
4. **चन्दन से पहले बनवीर ने किसकी हत्या की थी–**
   (अ) कीरत बारी ( )
   (ब) विक्रमादित्य ( )
   (स) सामली ( )

● आन्तरिक मूल्यांकन

1. अपने सहपाठियों के साथ मिलकर 'दीपदान' एकांकी का मंचन कीजिए।
2. डॉ० रामकुमार वर्मा की रचनाओं की एक सूची बनाइए।

❖